एपिसोड - 32

मौसम संबंधी प्रमुख समझौते

जीने की राह

मुख्य शोध व् आलेख - डॉ० मानस प्रतिम दास
हिंदी अनुवाद - श्रीमती सविता यादव

इस कड़ी में भी टिकाऊ विकास से सम्बंधित मुद्दों पर रोशनी डाली जायेगी | प्रदूषण और मौसम परिवर्तन पर किए गये सभी देशों के प्रयास और उनकी सफलता क्या रहीं हैं ? ग्रीन हाउस गैसों के उत्सर्जन पर काफी सफलता मिली है परन्तु बहुत सी दूसरी गैसें हैं जिनसे प्रदूषण फ़ैल रहा है | उनका उत्सर्जन, औद्योगिक विकास से जुड़ा हुआ है | अन्तर्राष्ट्रीय कायदे - कानूनों की धज्जियाँ उड़ाकर इनका उत्पादन जारी है | आम लोगों की जीविका को भी प्रदूषण नियंत्रण की प्रक्रिया से जोड़कर देखा जाना आवश्यक जान पड़ता है | आइये महाविद्यालय में द्वितीय वर्ष के छात्र संजय और बाकूल के माध्यम से इस समस्या पर विस्तार से जानने का प्रयास करते हैं |

दृश्य : गाड़ियों का शोर, बस सड़क पर दौड़ रही है | कलकाता के भीड़-भाड़ बाजार का दृश्य| सड़क परिवहन बस सेवा की एक बस अक्स्मात ब्रेक के साथ रुकती है | यात्रियों के शोर और चिल्लाने की आवाज....)

यात्री 1: कंडक्टर ये क्या हो रहा है ? बस को दूसरे रास्ते पर क्यों मोड़ रहे हो ? मैं कैसे अस्पताल पहुँचुँगी |

यात्री 2 : ये सब क्या है ? स्कूल की छुट्टी होने वाली है और मुझे अपनी बेटी को स्कूल से घर लाना है | तुम इस प्रकार बस का रूट कैसे बदल सकते हो |

यात्री 3 : ड्राईवर - क्या तुम्हें समझ नहीं है ? हमें बताना चाहिये था | हमें कार्यालय में देरी हो जायेगी - किसी को कोई ध्यान ही नहीं है |

(यात्रियों की आवाजें / चिल्लाहट / हमारी टिकट के पैसे वापिस करो | आप अपनी इच्छा से बस थोड़ी रोक सकते हो | कंडक्टर सभी को शांत होने के लिए कहता है)

कंडक्टर: आप मुझे बिना कारण ही दोषी करार दे रहे हो | सामने देखो.....आप समझ जाओगे, ये सब क्यों हुआ ?

यात्री 1 : क्या हुआ ? बहाना मत बनाओ |

कंडक्टर : मैं झूठ नहीं बोल रहा हूँ | खिड़की से बाहर देखो, सब समझ में आ जाएगा |

यात्री 2: मुझे तो कुछ दिखाई नहीं दे रहा | अच्छा-अच्छा उस तरफ ! कुछ गड़बड़ लग रही है|

यात्री 3: कहाँ पर ? मुझे भी देखने दो | कुछ तो गड़बड़ है जो इतनी भीड़ है | पुलिस लोगों को हटाकर इसको चारों तरफ से घेर रही है | कंडक्टर कुछ पता चला, क्या हुआ है ?

कंडक्टर : अब मेरे से पूछ रहे हो | पता चला है, पास में ही किसी फैक्ट्री से गैस का रिसाव हुआ है | अभी-अभी मेरे फ़ोन पर किसी ने सूचना दी है |

यात्री 3: किससे सूचना मिली है ?

कंडक्टर: वहाँ देखिये ! मैं उस मिठाई की दुकान के मालिक को जानता हूँ | उसे पता है, हमारी बस रोजाना, इसी समय यहाँ से आगे जाती है |

यात्रियों में सुग-बुगाहट - सभी शांत

बाकूल : कंडक्टर ! कुछ पता चला कौन सी गैस है ?

संजय : परन्तु उसने किसी गैस का नाम नहीं बताया है |

बाकूल : मैं जान गया हूँ | तुम रसायन शास्त्र के छात्र हो, आखिर कुछ तो ध्यान में आया होगा ?

संजय : प्रेम ठीक कह रहे हो | तीखी सी गन्ध यहाँ तक आ रही है |

बाकूल : हाँ दोस्त - यह अमोनिया गैस है |

संजय : इससे लगता है कि किसी फैक्ट्री में अमोनिया गैस का रिसाव हुआ है | यदि जल्दी ही इसे और अधिक फैलने से रोक नहीं लिया गया तो यह खतरनाक हो सकती है |

बाकूल : हाँ, यह किसी बड़ी दुर्घटना का रूप ले सकती है | शुरू में इससे आँखों में जलन महसूस होती है और उसके बाद गले और नाक में पीड़ा शुरू होती है | यदि इसका प्रभाव लगातार बना रहे तो बहुत बड़ी दुर्घटना घट सकती है | लोगों को अस्पताल में ले जाना पड़ सकता है |

संजय : तुम तो दहशत फैला रहे हो | ये कोई बड़ी बात नहीं है | शीघ्र ही गैस के रिसाव को बन्द कर दिया जायेगा और स्थिति नियंत्रण में आ जायेगी |

बाकूल : आशावादी होना ठीक है | परन्तु सदा यह सफल रहे, यह भी जरुरी नहीं है |

संजय : मैं समझा नहीं, तुम क्या कहना चाहते हो ?

बाकूल : मेरा कहना है कि लोगों की याददाश्त बहुत थोड़ी होती है | पिछले साल इसी प्रकार की घटना यहाँ हुई थी | और जानते हो, छः घन्टे तक उस पर नियंत्रण नहीं पाया जा सका था |

संजय: याद आया | वह जगह यहाँ से एक किलोमीटर है | दूसरे दिन सभी समाचार पत्र उस घटना से अटे पड़े थे |

बाकूल : अब बताओ, हमने उस घटना से क्या सीखा ? कुछ नहीं | क्यों नहीं उद्योगों को रिहायशी क्षेत्रों से हटाकर, दूर ले जाया जाए ? यदि मेरे पास इसका अधिकार हो तो, मैं तुरंत इन्हें बन्द करवा देता |

कंडक्टर : बाबू, बहुत से ग़रीब लोगों की रोजी-रोटी इन्हीं से चलती है | आप इनके बन्द होने की बात कैसे कर सकते हो | लोग-बाग भूखे मर जायेंगे |

संजय : बाकूल ! अच्छा होगा हम यहीं उतर जाएँ और किसी रिक्शा से कॉलेज चलें |

बाकूल : ये ठीक रहेगा | Let's go.

(दोनों बस से उतर कर, कॉलेज की ओर चल देते हैं)

ध्वनि प्रभाव (कॉलेज के मुख्य द्वार पर शोर....दोनों कारण जानने का प्रयास करते हैं)

बाकूल : लगता है, यहाँ भी कुछ गड़बड़ है | जिनको यहाँ नहीं होना चाहिये था, वे छात्र भी दिख रहे हैं | हड़ताल और वो भी अघोषित.....

संजय : मुझे मालूम करने दो | देखो ! अंकित वहाँ गेट के पास खड़ा है | अरे अंकित ! सुन रहे हो | अंकित भी क्रोध में है | कोई गड़बड़ जरुर है |

(अंकित दौड़ता हुआ आता है - वह हाँफ रहा है)

संजय : क्या हुआ है ? सभी गेट पर क्यों हो ? कक्षायें नहीं लग रही |

अंकित : बहुत बड़ा घोटाला ....A big scandal.

बाकूल : कौन सा घोटाला ? ऐसा क्या हुआ है ?

अंकित : रसायन शास्त्र के प्रथम वर्ष के प्रश्न-पत्र लीक हो गए हैं |

बाकूल : आपको कैसे पता ?

अंकित : आज सुबह मेरे दोस्त सुवांकर के पास एक फोन आया था | फोन करने वाले ने सोचा कि वह प्रथम वर्ष का छात्र है | उसने दो हज़ार रूपये में पूरे का पूरा प्रश्न पत्र बताने की बात कही |

संजय : इतने से रुपयों में ? आजकल लोगों के पास धन की कोई कमी नहीं है |

बाकूल : संजय ! बन्द करो ये सब | अच्छा आगे क्या हुआ -सुवांकर?

अंकित : फ़ोन से सुवांकर को और जानने की जिज्ञासा हुई | उसने - उससे, जुबली हॉल के पास मिलने की बात कही |

बाकूल : आप कह रहे हैं कि सुवांकर ने उसको पैसे दिये |

अंकित : हाँ, उसने उसे पैसे दिए और इसका, उसने स्टिंग ऑपरेशन के तौर पर इस्तेमाल किया | उसने बातचीत रिकॉर्ड करने के लिए सारे समय अपना मोबाइल फ़ोन रिकॉर्डिंग के लिए चालू रखा | ये सब सारी घटना उसके फ़ोन में दर्ज हो गई |

बाकूल : पता चल, इस घटना के पीछे कौन है ?

अंकित : लगता है, कंप्यूटर कक्ष से कोई है ? उसे पकड़ने के लिए प्रयास जारी है |

संजय : आज का दिन भी बड़ा विचित्र दिन निकला | पहले अमोनिया गैस का रिसाव और उसके बाद प्रश्न पत्र का आउट हो जाना |

बाकूल : अब क्या करना है संजय ? घर चलें या कोई दूसरा काम है|

संजय : पहले एक कप कॉफ़ी | दिमाग फ्रेश होने का बाद सोचते हैं कुछ..

बाकूल : अपना बोनी दादा जिंदाबाद !

संजय : (हँसते हुई) सही फ़रमाया !

(दोनों सड़क के किनारे चलते हुए बोनी दादा के स्टॉल पर पहुँचते हैं |)
(ध्वनि प्रभाव)

संजय : बोनी दादा कैसे हो ? दो चाय वो भी लेमन वाली |

बोनी : बैठो बाबू | आज अकेला हूँ, थोड़ा समय लगेगा |

बाकूल : आज छोटू नज़र नहीं आ रहा | कहाँ गया ?

बोनी : छोटू अभी-अभी गया है | अपने पिता को देखने |

संजय : पिता को देखने | क्या हुआ ?

बोनी : नाज़र बाज़ार में किसी जगह कोई दुर्घटना घटी है | किसी फैक्ट्री में गैस का रिसाव हुआ है | छोटू का पिता वहीँ मजदूरी करता था | उसी फैक्ट्री में वह रहता भी था | थोड़ी देर पहले एक फ़ोन आया था | कह रहा था, छोटू के पापा को अस्पताल में भर्ती करवाया गया है |

संजय : अरे ! बाकूल, हमारी बस को इसी दुर्घटना के कारण रोका गया था |

बाकूल : हाँ ! लगता है, काफी गम्भीर बात है | छोटू का पापा, लगता है गैस के भण्डार के पास ही कहीं रहता होगा | इसीलिये उस पर इसका असर ज्यादा पड़ा होगा |

संजय : काफी गम्भीर लग रहा है | क्या फ़ोन करने वाले ने और कुछ बताया था ?

बाकूल : कुछ नहीं बताया होगा | सभी हड़बड़ी में रहे होंगे | उसे प्रभावित लोगों के घरों पर सूचना देने की जिम्मेदारी दी गई होगी |

संजय : इसका मतलब है कि, यह एक बड़ी दुर्घटना घटी है |

बाकूल : मैं बार-बार कहती हूँ कि इस प्रकार की फैक्ट्रियों को बन्द कर देना चाहिये | लोग अपनी जान को जोखिम में डालकर, रोजी-रोटी कमाने के लिए आते हैं |

(एक अधेड़ उम्र का व्यक्ति, उनकी चर्चा में शामिल होता है)

फारुख़: अमोनिया गैस की माँग बहुत बढ़ रही है, वो भी यूरिया के कारखानों में | ये उद्योग, कभी इस प्रकार की फैक्ट्रियों को बन्द नहीं होने देंगे | इनके पास सभी प्रकार के हथकंडे हैं |

बोनी : फारुख चाचा, एक चाय और चलेगी |

फारुख़: हाँ ! मन तो कर रहा है | थोड़ा तेज हो | आज गला बैठा हुआ है |

बोनी: मैंने कहा था, चाय से गला ठीक नहीं होगा | किसी डॉक्टर को क्यों नहीं दिखाते |

फारुख़: अरे भाई | मैंने बताया ना, मेरे पास पैसे नहीं हैं |

संजय : क्या हुआ तुम्हारे गले को ?

(फ़ारुख खाँसता है, पर कुछ नहीं बोलता)

बोनी : वह आपको नहीं बतायेगा | फारुख, एक प्लाईवुड बनाने वाली फैक्ट्री में काम करता है | दक्षिण में स्थित यह एक बड़ी फैक्ट्री है | फारुख की तरह ज्यादातर काम करने वाले मजदूर, स्वास्थ्य से सम्बंधित रोगों से ग्रसित हैं |

फारुख़: बोनी ये क्या ? फिर लोगों को बता रहे हो | मुझे अच्छा नहीं लगता है (खाँसता है) |

बोनी: तुम चुप रहो | मैं कह रहा हूँ ना | फारुख फैक्ट्री में उठने वाली डस्ट का मारा है | सुरक्षा के लिए उसने अपने सभी मजदूर भाईयों को जागरूक करने का प्रयास किया | परिणाम उसे ही बाहर का रास्ता दिखा दिया |

(फ़ारुख जोर-जोर से खाँसता है)

संजय : बड़े दुर्भाग्य की बात है |

बोनी : ये रही आप दोनों की निम्बू की चाय |

बाकूल : # (चुस्की लेती हुई) एकदम मजेदार | परन्तु - फारुख - नहीं - नहीं .....दादा|

फ़ारुख : मुझे फ़ारुख ही कहो | यह मुझे अच्छा लगता है | देखो | कहीं भी औद्योगिक इकाईयाँ सुरक्षा के मापदण्डों को पूरा नहीं करती हैं | कानून तोड़ने का वे.....कोई ना कोई रास्ता निकाल लेती हैं |

बोनी : फ़ारुख अपनी नहीं सभी की बात करता है | उसको सभी लोगों की, सारे संसार की चिन्ता है | फ़ारुख ... ये रही तुम्हारी चाय |

फ़ारुख : (एक लम्बी चुस्की लेते हुए) आप लोग, कॉलेज के पात्र लग रहे हो | सी.एफ.सी. का तो नाम सुना ही होगा |

संजय : मेरा मतलब है कि तुम क्लोरोफ्लोरो कार्बन की बात कर रहे हो |

फ़ारुख : ठीक कहा | इसके उत्पादन को बन्द करने के लिए अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर क़ानून बने| परन्तु इसकी कौन परवाह करता है ?

बाकूल : आप - मोंट्रियल समझौते की बात कर रहे हो | फ़ारुख तुम्हारे इस विषय पर पकड़ की मैं प्रशंसा करती हूँ |

बोनी : मैं ठीक कह रहा था | उसे इस सारे जहान की चिंता है | रोजाना सुबह-सुबह वह मेरे स्टाल पर आता है और सारे समाचार पत्र को बड़े ध्यान से पढ़ता है |

संजय : यह प्रोटोकॉल 1987 में पास हुआ था, जब सभी देशों ने इस पर हस्ताक्षर कर दिये थे |

बाकूल : संजय - तुम्हें दिनांक और वर्ष रटे हुए हैं | यह 1987 का ही वर्ष था | हमें भी यही बताया गया है कि इस समझौते के तहत सी.एफ.सी. का उत्पादन सन 2010 के बाद, पूरे विश्व में बन्द कर दिया जायेगा |

फ़ारुख : सभी गलत सूचनायें | एक सप्ताह पहले ही मैंने पढ़ा है कि, चीन के दस प्रान्तों में अब भी सी.एफ.सी. अवैध रूप से काम में ली जा रही है |

संजय : यदि उत्पादन बन्द कर दिया गया है तो कहाँ से आ रही है ?

फ़ारुख : मंगोलिया में अनाधिकृत इकाइयाँ काम कर रही हैं | यहाँ तक कि चीन में भी ये फैक्ट्रियाँ काम कर रही हैं | यदि ये हाल दूसरे देशों का है तो हमारे देश में अमोनिया गैस का गैर-सुरक्षित उत्पादन कैसे रुक सकता है |

बाकूल : सी.एफ.सी. गैसें, मुझे पता है, कई औद्योगिक ईकाइयों में अब भी काम में ली जाती हैं |

फ़ारुख : चीन में सी.एफ.सी.-11 का गद्दों के उत्पादन में धड़ल्ले से प्रयोग हो रहा है | निर्माण क्षेत्र में ताप-रोधक के लिए इस प्रकार के फोम की बहुत माँग है |

बाकूल : आश्चर्य ! विभिन्न देशों के बड़े-बड़े नेताओं द्वारा लिए गये निर्णयों का क्या हो रहा है ? जहाँ से चले थे, अभी वहीं पर हैं |

संजय : सी.एफ.सी. गैसें, पृथ्वी की ओज़ोन परत के लिए बहुत हानिकारक हैं | यदि यह परत गायब हो जाये तो घात्क पारा बैंगिनी (Ultra-violet) किरणें, डायरक्ट धरती पर पहुँचेंगी |

बोनी : मुझे आशा है कि छोटू के पापा ठीक होंगे | यदि उसे अस्पताल रुकना पड़ गया तो, मेरे लिए समस्या हो जायेगी |

फ़ारुख : यदि छोटू यहाँ काम करता है तो, तुम्हारे लिए समस्या आ सकती है | बोनी, तुम बाल मजदूर अपराध के कारण जेल जा सकते हो |

बोनी : शुभ-शुभ बोलो, फ़ारुख | मैं कभी चाय के लिए तुमसे पैसे नहीं माँगता और मेरा ही अहित सोचते हो |

फ़ारुख : परन्तु यह सच्चाई है | क्या होगा, यदि किसी दिन पुलिस आ जाये और छोटू को देखकर, तुम्हें अपने साथ ले जाये |

बाकूल : वह सच कह रहा है | बाल मजदूर रखना एक अपराध है | हमें मालूम है आप दयालु हैं और छोटू से अच्छा व्यवहार करते हैं | परन्तु क़ानून तो क़ानून है | (बोनी उदास हो जाता है | उसकी आवाज़ दब जाती है)

बोनी : ये तो सब ठीक है | यदि में छोटू को घर भेज देता हूँ तो..... मुझे नहीं लगता वह मेरी दुकान को छोड़ सकेगा | दुर्गा पूजा के बाद, मैं उसे एक स्कूल में दाखिला दिलाना चाहता हूँ |

संजय : बोनी दादा, ये तो ठीक है, परन्तु कानून का भी ख्याल रखना जरुरी है |

बाकूल : संजय, अब चलते हैं, हो सकता है धरना समाप्त हो गया हो | हो सकेगा तो, मैं अपने प्रैक्टिकल का काम करना चाहूँगी |

संजय : ठीक, चलते हैं | बोनी दादा, ये लो अपने पैसे |

बाकूल : और फ़ारुख चर्चा के लिए धन्यवाद | हम यहाँ आते रहते हैं, फिर मिलेंगे |

(दोनों..... जल्दी में चल देते हैं | फ़ारुख को तेज खांसी)

बाकूल : आज तो बहुत गर्मी है |

संजय : देखो | मेरा रुमाल तो पसीने से गीला ही हो गया |

बाकूल : इस समय तो इतनी गर्मी नहीं होनी चाहिए थी |

संजय : ये तो ठीक है | रात को भी पंखा पूरी स्पीड पर चलाना पड़ता है | और जानती हो, मेरी दादी क्या कहती है ?

बाकूल : क्या ?

संजय : कहती है, पहले कभी इतनी गर्मी नहीं पड़ती थी | जब शादी के बाद वह यहाँ आई थी तो इस समय कलकाता का मौसम बहुत सुहावना होता था |

बाकूल : (हंसती है) अच्छी याददाश्त | वो सही कहती हैं | मौसम विभाग भी यही कहता है कि दिन-प्रतिदिन तापमान बढ़ रहा है |

संजय : बाकूल ! सही भी है | वायुमंडल में कार्बन डाई-ऑक्साइड की मात्रा दिन-प्रतिदिन बढ़ती ही जा रही है |

संजय : बाकूल ! कुछ याद है प्रोफ़ेसर रक्षित का |

बाकूल : क्या हुआ उन्हें ?

संजय : अरे ! तुम तो भूल ही गई | याद करो छः महीने पहले हुए सेमिनार को |

बाकूल : एक फिल्म दिखाई गई थी | क्या नाम था ? हाँ याद आया 'An Inconvenient Truth' यानी..... 'एक कड़वी सच्चाई' |

संजय : प्रोफ़ेसर रक्षित ने पर्यावरण में हो रहे बदलावों के बारे में बताया था |

बाकूल : तुमने सही कहा है | वो दिसम्बर के महीने में पोलैंड जाने के लिए कह रहे थे|

संजय : दिसम्बर के प्रथम सप्ताह में | वो कह रहे थे विश्व के विभिन्न प्रतिनिधियों की 24वीं बैठक आयोजित हो रही है यानी Conference of Parties.

बाकूल : अच्छा, चलें उनसे मिलने के लिए | यदि प्रैक्टिकल की कक्षायें नहीं होती हैं तो उनसे मिलकर जानते हैं |

संजय : अच्छा विचार ! परन्तु देखो, धरना तो अभी भी चल रहा है| अच्छा एक काम करते हैं !

बाकूल : क्या ?

संजय : कैंटीन के पीछे एक छोटा गेट है | उसके रास्ते हम अन्दर चलते हैं और देखते हैं प्रोफ़ेसर रक्षित कहाँ हैं |

बाकूल : अच्छा सुझाव | मान गए | चलो -चलो - अब और देर नहीं |

दृश्य परिवर्तन

संजय : अच्छा हुआ, किसी ने नहीं देखा | आइये देखते हैं प्रोफ़ेसर रक्षित अपने कमरे में हैं क्या ?

बाकूल : सारे कमरे खाली पड़े हैं | हमारे प्रोफ़ेसर या तो किसी बैठक में होंगे या फिर चले गए होंगे |

संजय : वो हमारा काम नहीं| यह प्रोफ़ेसर का कमरा है, परन्तु मुझे तो खाली ही लग रहा है|

प्रोफ़ेसर : O.K. Come....Come.

बाकूल : Good morning Sir !

संजय : सर ! हम आपको ही देख रहे थे |

प्रोफ़ेसर : मुझे... अच्छा बताओ क्या बात है ? तुम्हारे सभी साथी तो गेट पर हैं और तुम दबे पाँव चुपके से मुझे मिलने चले आये (हँसते हुए) |

संजय : नहीं सर...ऐसा नहीं है | सेमिनार में दिये गये आपके भाषण ने, हमें बहुत प्रभावित किया था |

प्रोफ़ेसर : किस सेमिनार की बात कर रहे हो ? जो पर्यावरण पर आयोजित किया गया था !

बाकूल : ठीक कहा सर | बहुत ही जानकारी परख था | आपने कहा था कि, आप पोलैंड भी जा रहे हो |

प्रोफ़ेसर : हाँ, मैं वहाँ गया था | इसे COP24 यानी कि Conference of Parties की 24वीं बैठक कहा गया था |

बाकूल : सर, हम जानना चाहते हैं वहाँ क्या हुआ ? धरती का तापमान बढ़ रहा है, इसे रोकने के क्या प्रयास हो रहे हैं |

प्रोफ़ेसर : अच्छा.... पोलैंड की प्रगति....तुम जानते हो |

बाकूल : नहीं सर, हमें नहीं पता | कृपया आप कुछ बताएँगे ?

प्रोफ़ेसर : क्या नाम हैं तुम्हारे ?

संजय : सर...मैं संजय और ये हैं बाकूल....द्वितीय वर्ष की छात्रा |

प्रोफ़ेसर : (हँसते हुए) बहुत अच्छा... ये बताइये इस प्रकार की अन्तर्राष्ट्रीय बैठकों में क्या होता होगा ?

संजय : सर ! हमें कोई ज्ञान नहीं है |

बाकूल : कुछ समझौतों पर हस्ताक्षर हुए होंगे |

प्रोफ़ेसर : (हँसते हुए) हर साल किसी समझौते पर हस्ताक्षर हो जाए तो ये इतनी बड़ी समस्या नहीं बनती | मेरे दोस्तों, ये इतना सरल नहीं है, यदि हस्ताक्षर हो भी जाएँ, तो उसे लागू करना इतना आसान नहीं है |

संजय : हाँ सर |

प्रोफ़ेसर : क्या समस्याएँ हो सकती हैं, इसे समझना भी सरल नहीं ? सबसे पहले पर्यावरण पर जो समझौता हुआ था, उसे क्योटो प्रोटोकॉल के नाम से जाना जाता है |

संजय : सर ये 1997 की बात है |

प्रोफ़ेसर : बहुत अच्छा | लगता है सेमिनार को तुमने ध्यान से सुना था |

बाकूल : सर ! संजय, आंकड़ों को बहुत जल्दी याद कर लेता है |

प्रोफ़ेसर: एक अच्छा गुण है | इस बार यह सम्मलेन पोलैंड में आयोजित किया गया था | पैरिस समझौता जो कि 2010 में हुआ था, उसको आधार प्रदान करने के लिए इसकी महति भूमिका होगी |

बाकूल : मैंने समाचार पत्रों में इसके बारे में पढ़ा था | परन्तु मैं समझी नहीं - पैरिस सम्मलेन इतना महत्वपूर्ण क्यों है ?

प्रोफ़ेसर : मुझे स्थिति को स्पष्ट करने दो | क्योटो प्रोटोकॉल में ये साफ़ कहा गया था कि विकसित देशों को सन 2012 तक घटाकर अपने यहाँ ग्रीन हाउस गैसों का स्तर कितना कम करना है | इसके बाद, एक नये समझौते की जरुरत थी | इसको सभी देशों ने पैरिस सन्धि में हस्ताक्षर किये थे |

संजय : इस बार क्या लक्ष्य रखे गये थे |

प्रोफ़ेसर : उद्धेश्य यही था कि बढ़ रहे तापमान का स्तर 1.5 C तक रखा जाये, जो कि ओद्योगिक क्रांति से पहले था | दूसरा इस प्रकार के मुद्दों के लिए धन की व्यवस्था करना |

बाकूल : क्या इसके लिए विश्व के सभी देश सहमत हो गए थे | मैंने सुना है कि संयुक्त राज्य अमेरिका इसका विरोध कर रहा है |

प्रोफ़ेसर : आपने ठीक कहा | अमेरिका इस समझौते में सन 2016 में शामिल हुआ था, परन्तु जुलाई 2017 में इससे हटने की घोषणा कर दी | हालाँकि नवम्बर 2020 तक वह इस समझौते का भाग बना रहेगा | इससे पहले वह इसे नहीं छोड़ सकता है |

संजय : अच्छा, यही कारण है कि पैरिस का समझौता अपने लक्ष्य से पिछड़ रहा है |

प्रोफ़ेसर: अभी किसी निर्णय पर पहुँचना उचित नहीं है | हमें आशावादी होना चाहिये | यह समझौता 184 देशों द्वारा पास कर दिया गया है और नवम्बर 2016 से लागू भी हो गया है | पैरिस सम्मलेन की कई उपलब्धियाँ भी रही हैं |

संजय : वो क्या सर ?

प्रोफ़ेसर : अठारह विकसित देशों ने प्रतिवर्ष 100 बिलियन डॉलर की धनराशि देने का वादा किया था | इस धन को ग़रीब देशों में पर्यावरण सुधार के काम में लगाया जायेगा | अभी तक 70 मिलियन डॉलर जुटाए जा चुके हैं |

संजय : सर, मैं कुछ समझा नहीं | आज सुबह ही एक फैक्ट्री में अमोनिया गैस का रिसाव हुआ है | ज्यादातर लोग चाहते हैं कि इस प्रकार की ओद्योगिक इकाईयों को बन्द कर दिया जाए |

बाकूल : हाँ सर | परन्तु इनमें काम करने वाले लोगों का क्या होगा?

प्रोफ़ेसर : मैं अब भी तुम्हारे विचारों से सहमत नहीं हूँ |

संजय : सभी देशों में इस प्रकार के कदम उठाये जाने का मतलब है कि जीवाश्म ईंधन पर प्रतिबन्ध यानी पूर्ण रोक | ठीक सर |

प्रोफ़ेसर : सही कहा है | आगे तुम्हारा क्या मानना है ?

संजय : यदि ये सब बन्द कर दिया जायेगा तो बेचारे कामगार कहाँ जायेंगे ?

प्रोफ़ेसर: बहुत अच्छा संजय | एक सवाल में ही कई सवाल जुड़े हुए हैं | देखो, इस प्रकार के सम्मेलनों में टांग खिचाई ज्यादा होती है | सभी देश पीछा छुड़ाना चाहते हैं | परन्तु वैज्ञानिकों का और हमारे जैसे आब्जर्वर का काम इसे आगे बढ़ाना है |

बाकूल : सर ! इस बार आपको क्या अच्छा लगा ?

प्रोफ़ेसर : पोलैंड में जिस जगह यह बैठक हुई थी, वह Katowick शहर कोयले की खदानों के केंद्र में है | सम्मलेन से कुछ समय पूर्व ही पोलैंड ने एक नई कोयले की खदान शुरू करने की घोषणा की थी |

बाकूल : सर, यहाँ तो आयोजक ने ही, सम्मलेन की मूल भावना का अपमान किया है|

प्रोफ़ेसर: हाँ, आपका कहना ठीक है | परन्तु उनके द्वारा उठाये गये मुद्दों पर भी ध्यान देना आवश्यक है |

संजय : वो क्या सर ?

प्रोफ़ेसर : उस देश की 80% विद्युत ऊर्जा की पूर्ती कोयले से होती है, इसलिए, इससे छुटकारा पाना या फिर कम करना इतना आसान नहीं है | वहाँ पर लगाये गये एक पंडाल में वे सारी वस्तुएँ प्रदर्शित की गई थी, जो कि कोयले से बनाई गई थी | यहाँ तक कि साबुन और कानों की बालियाँ तक (हँसते हुए) |

बाकूल : आश्चर्य !

संजय : परन्तु यहाँ पर मजदूरों की रूचि का ख्याल कहाँ उठता है ?

प्रोफ़ेसर : धैर्य रखो दोस्त | पोलैंड के राष्ट्रपति ने इस नये बदलाव की बात कही थी |

बाकूल : एक नये बदलाव की ओर |

प्रोफ़ेसर: एक नई योजना के तहत, कामकारों को प्रक्षिशित करके नये रोज़गार उपलब्ध करवाना | आप स्वच्छ पर्यावरण के नाम पर लोगों से काम नहीं छीन सकते हैं | नहीं तो समाज और देश में अशांति फ़ैल जायेगी |

संजय : उचित जान पड़ता है | पर्यावरण की रक्षा और लोगों की रोजी-रोटी दो अलग-अलग मुद्दे हैं, परन्तु इन्हें बिल्कुल अलग भी नहीं किया जा सकता है |

प्रोफ़ेसर : परन्तु ऐसी बात भी नहीं है | विश्व के कई देशों में अच्छे काम हुए हैं | कोयले की खपत को कम किया जा रहा है | दूसरी गैर-पारंपरिक ऊर्जा स्त्रोत का प्रयोग बढ़ रहा है |

बाकूल : मैंने अमेरिका की एक आदिवासी जनजाति के बारे में पढ़ा है |

सजय : क्या है ?

बाकूल : उन्होंने कोयले वाले क्षेत्रों को किसी कंपनी को पट्टे पर दिया है | परन्तु ये शर्त रखी है कि स्थानीय लोगों को काम पर रखा जायेगा | परन्तु प्रदूषण से अब सारा क्षेत्र प्रभावित हो गया है, जिसका प्रभाव जनजाति के लोगों पर भी पड़ रहा है |

प्रोफ़ेसर : ठीक कह रहे हो | इसीलिये गैर-सरकारी संस्थायें आगे आ रही हैं, जिससे कि उनके लिए नये रोज़गार के क्षेत्र उपलब्ध करवाये जा सकें | संजय ! आशाएँ सदैव बनी रहती हैं |

संजय : सर ! इस प्रकार के काम प्रशंसनीय हैं |

प्रोफ़ेसर : परन्तु अब तुम्हें जाना होगा (हँसते हुए)

बाकूल : सर, हमसे कोई गलती हुई है ?

प्रोफ़ेसर : नहीं ऐसा नहीं है | बात ये है कि मैं इस सम्मलेन से सम्बंधित एक पुस्तक का संपादन कर रहा हूँ | मुझे इसे अंतिम रूप देना है | आगे कभी, मुझे तुमसे बात करके अच्छा लगेगा | आप दोनों, बहुत ही होनहार हो |

संजय/बाकूल: धन्यवाद सर | बाई !

प्रोफ़ेसर : और सुनो, द्वार पर लोगों को क्रोधित मत करना | जहाँ से आये हो, उसी रस्ते से निकल जाना (सभी हँसते हैं) |

समापन संगीत